VOL- X | ISSUE- VI | JUNE | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

सामाजिक कार्य : एक चिंतन

डॉ. दिलीप किशन राठोड
सहाय्यक प्राध्यापक
एस.एस.एस. कॉलेज ऑफ एज्युकेशन
विष्णुपूरी नांदेड, महाराष्ट्र (भारत)
Email : deeprathod24@rediffmail.com

सारांश :-

समाज कार्य ऐसी व्यावसायिक सेवाओं का विधान है, जिसके द्वारा व्यक्ति, समूह एवं समुदाय की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न प्रकार के साधनों को वैज्ञानिक पद्धतियों द्वारा इस प्रकार जुटाया जाता है कि व्यक्ति अपनी सहायता स्वयं कर सकते है। समाज सेवा से अभिप्राय उन संगठित कार्यों से है जिनका सीधा सम्बन्ध प्रथाओं या रुढियों से है जो मानवीय साधनों की रक्षा और उन्नति मे सहायक होती है।

समाज कार्य सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं की रोकथाम एवं उपचार की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है। आज इसका महत्व निरन्तर बढता जा रहा है। तथा इसमें कुछ ऐसे उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करने की आशा भी की जाने लगी है जो सामाजिक नीतियों के निर्माण तथा उन्हें लागू करने में महत्वपूर्ण होते हैं। समाज कार्य मानव आवश्यकताओं को समझने, इनकी प्राप्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं तथा इन्हें प्राप्त करने के ढंगों को समझने में सहायक है। समाज कार्य की मौलिक अवधारणाओं को समझकर इस विषय को और अधिक लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

१. प्रस्तावना:-

आधुनिक समाज विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रसित होता जा रहा है। एक तरफ जहां व्यक्ति तनाव एवं आवश्यक जैसे ही मानसिक समस्याओं का सामना कर रहा है, वही समाज के विकास में भी विभिन्न प्रकार की बाधाएं उपस्थित हैं। ऐसी परिस्थितियों में समाज कार्य एक ऐसे व्यवसाय के रूप में विकसित हुआ है, जो अपने विशिष्ट कार्य प्रणालियों के माध्यम से न केवल व्यक्ति की व्यक्तिगत समस्याओं को दूर करने में सक्षम है। बल्कि विभिन्न प्रकार के सामाजिक सेवाओं का भी आयोजन कर के सामाजिक समस्याओं को दूर करने तथा लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने का कार्य कर रहा है।

समाज कार्य के अंतर्गत व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करने का दायित्व ग्रहण किया जाता है। समाज कार्यकर्ता, समाज कार्य व्यवसाय के अंतर्निहित ध्यान एवं कुशलताओं के आधार पर सामाजिक समस्याओं का बहुआयामी समाधान करता है। जिसमें मनो सामाजिक एवं मनोज शारीरिक समस्याओं के समाधान के साथ-साथ सामाजिक विकास की आवश्यकताओं की भी पूर्ति की जाती है।

उच्च शिक्षा के एक विषय के रूप में समाज कार्य मानव व्यवहार एवं सामाजिक व्यवस्था संबंधी सिद्धांतओं के साथ-साथ मानव अधिकारों एवं सामाजिक न्याय के सिद्धांतों का उपयोग करते हुए व्यक्तियों समूहों एवं समुदायों की समस्याओं का समाधान करने, सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहन देने तथा लोगों को अपना जीवन उन्नत करने हेतु सशक्तिकरण एवं स्वतंत्रता प्रदान करने से संबंधित है। समाज कार्य विशेषज्ञों पर मनो सामाजिक समस्याओं को समझने तथा उनका निदान सुलझाने का चुनौती भरा उत्तरदायित्व होता है। इसलिए समाज कार्य को एक सहायक प्रदान करने वाला व्यवसाय भी माना जाता है। जो व्यक्तियों, समूहहों एवं समुदायों को अपनी समस्याओं को समाधान करने हेतु आत्म सहायता करने योग्य बनाता है।

२. समाज कार्य का अर्थ/ परिभाषा:-

१. "समाज कार्य व्यक्ति की व्यक्तिगत एवं सामाजिक परिस्थिति में सामाजिक कार्यकर्ता को बढ़ाने के लिए ऐसी प्रस्तुतियों का प्रयोग करता है। जिनका संबंध मनुष्य और उनके पर्यावरण के बीच परस्पर संबंधी क्रियाओं से है।"

२. "समाज कार्य ऐसी कला है जिसमें विभिन्न साधनों का प्रयोग वैयक्तिक सामूहिक एवं सामुदायिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता है। जिसमें लोगों की सहायता की जाती है। की वे स्वयं अपनी सहायता कर सकें।"

३. "समाज कार्य का प्रमुख कार्य व्यक्तियों की उन कठिनाइयों को दूर करने में सहायता देना है। जोगी एक संगठित समूह की सेवाओं के प्रयोग से या उनके एक संगठित समूह के सदस्य के रूप में कार्य संपादन से संबंधित है।"

समाज कार्य के विकास के दौरान बहुत लंबे समय तक इस बात पर भी ज्यादा जोर दिया जाता रहा है कि, समाज कार्य कार्य मात्र वर्तमान समय में विद्यमान समस्या का समाधान और उसके परिवेश व संदर्भ है किंतु अब इसके साथ ही यहां भी समाज रूप से माना जाने लगा है कि समाज कार्य का अध्ययन भाभी स्थित परिवर्तन भी है। इच्छित भावी परिवर्तन से समन्वय की बात जनतांत्रिक मूल्यों की स्वीकृति और इस पर आधारित समाज कार्य की स्थापना के कारण महत्वपूर्ण हो गई है।

३. सामाजिक कार्य का विषय क्षेत्र:-

समाज कार्य का विषय-क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। इसका कारण यह है कि जहां कहीं व्यक्ति की प्रभावपूर्ण सामाजिक क्रिया तथा उनके समायोजन के मार्ग में व्यवधान उत्पन्न करने वाली समस्या होगी, वहां समाज कार्य की सहायता की आवश्यकता होती है।

१. बाल विकास
२. महिला सशक्तिकरण
३. विद्यालय समाज कार्य
४. युवा कल्याण
५. वृद्धों का कल्याण
६. श्रम कल्याण
७. बाधितों का कल्याण
८. अनुसूचित जातियों और जनजातियों एवं अन्य बिछड़े वर्गों का कल्याण
९. चिकित्सीय एवं चिकित्सीय समाज कार्य
१०. ग्रामीण विकास
११. सामाजिक प्रतिरक्षा एवं अपराधी सुधार
१२. सामाजिक सुरक्षा
१३. मानव अधिकारों का संरक्षण तथा सामाजिक न्याय को प्रोत्साहर
१४. कानूनी सहायता
१५. पर्यावरण संतुलन
१६. मानव अधिकारों का संरक्षण तथा सामाजिक न्याय को प्रोत्साहर

4. सामाजिक कार्य के उद्देश्य:-

१. भौतिक सहायता प्रदान करना
२. समायोजन स्थापित करने में सहायता देना
३. मानसिक समस्याओं का समाधान करना
४. कमजोर वर्ग के लोगों को अच्छे जीवन स्तर की सुविधाएं उपलब्ध कराना
५. वर्तमान विधानों/ अधिनियमों वांछित संशोधन हेतु सुझाव देना
६. व्यक्तियों में सामंजस्य की क्षमता विकसित करने में सहायक प्रदान करना
७. समाज में शांति व्यवस्था को बनाए रखने हेतु प्रोत्साहित करना
८. व्यक्तियों को उनके जीवन में सुख एवं शांति का अनुभव कराने हेतु प्रयास करना
९. सामाजिक उन्नति एवं विकास के विभिन्न अवसर उपलब्ध कराना
१०. समाज में पाई जाने वाली समस्याओं के विरुद्ध स्वस्थ जनमत तैयार करना

5. समाज कार्य के मूल्य:-

१. मनुष्य की महत्ता तथा गरिमा बनाए रखना
२. मानव प्रकृति में पूर्णमासी विकास की क्षमता विकसित करना
३. मतभेदों के लिए सहनशील होना

४. मौलिक मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि स्वीकार करना
५. स्वाधीनता में विश्वास करना
६. आत्म निर्देशन
७. अनिर्णायक प्रवृत्ति
८. रचनात्मक सामाजिक सहयोग
९. कार्य का महत्व तथा रिक्त समय का रचनात्मक उपयोग
१०. मनुष्य एवं प्रकृति द्वारा उत्पन्न किए गए खतरों से अपने अस्तित्व की रक्षा।

माननीय कष्ट एवं सुविधाएं अवांछनीय होती हैं। जिसके कारण उन्हें रोका जाना चाहिए अथवा कम किया जाना चाहिए। व्यक्तियों में पाए जाने वाले अंतरों असमावतों को स्वीकार करना चाहिए। समुदाय का यह उत्तरदायित्व है। कि वह बिना किसी भेदभाव के अपने सभी सदस्यों को सामाजिक सेवाएं उपलब्ध कराएं। समाज कार्य सिद्धांतों में गोपनीयता, व्यक्तिवाद, गैर निर्णय, मुवक्किल कार्यकर्ता संबंध, नियंत्रित भावात्मक अन्तग्रस्तता, भावनाओं का अभिव्यक्ति तथा आत्म संकल्प प्रमुख है।

6. भारत में समाज कार्य शिक्षा का विकास :-

भारत में समाज कार्य शिक्षा के विकास के संदर्भ में यह तथ्य भी उल्लेखनीय है की, अमेरिका एवं यूरोप के देशों के विपरीत यहां किस का व्यवसाय के रूप में विकास धीमी गति से हुआ है। अनेक विद्वान तो आज भी विशिष्ट सैद्धांतिक ज्ञान की शाखा के रूप में समाज कार्य विषय पर संदेह रखते हैं। इसके प्रमुख कारण अगर प्रकार हैं।

१. भारत में विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों द्वारा समाज कार्य के मूल्यों, दर्शन, सिद्धांतों, प्रणालियों, प्रविधियों को उसी रूप में स्वीकार नहीं किया गया है। जैसे कि अमेरिका एवं अन्य विकसित देशों में हुआ है।
२. भारत में एक विषय के रूप में समाज कार्य के अर्थ के बारे में आज भी भ्रम बना हुआ है इसे परोपकार का कार्य तथा दान से संबंधित कार्य समझने के साथ-साथ निस्वार्थ सेवा, श्रमदान अथवा आपातकालीन सेवा के रूप में भी समझा जाता है। कई बार तो 16 शारीरिक श्रम को भी समाज कार्य की श्रेणी में सम्मिलित किया जाता है
३. भारत में एक विषय के रूप में समाज कार्य के भारत के बारे में पाए जाने वाले धर्म के साथ-साथ समाज कार्यकर्ता का अर्थ भी स्पष्ट नहीं है समाज द्वारा दानी परोपकारी नेता स्वैच्छिक कार्यकर्ता इत्यादि विविध प्रकार के लोगों को समाज कार्यकर्ता कहा जाता है जिससे समाज कार्य का व्यवसाय शुरू करने में कठिनाई हो रही है
४. भारत की अधिकांश समस्याओं की जड़ एक सामाजिक संरचना में गड़ी हुई है। जिसके कारण अपेक्षित परिवर्तन लाना बहुत कठिन कार्य है। इसलिए समाज कार्यकर्ताओं के लिए समस्याओं का समाधान करना सरल कार्य नहीं है।
५. भारत में समाज कार्य से संबंधित शिक्षण सामग्री का भी नितांत अभाव है। अधिकांश पुस्तकों में समाज कार्य का परिचय पश्चिमी देशों में उपलब्ध शिक्षा के आधार पर दिया गया है। इसलिए भारतीय संदर्भ में समाज कार्य का अर्थ है इसका विषय क्षेत्र एवं विषय -वस्तु स्पष्ट नहीं हो पाती है।
६. भारत भारत में समाज कार्य की प्रणालियों का समुचित विकास नहीं हो पाया है। जिसके कारण समस्याओं के समाधान हेतु अधिकांशतः प्रयास एवं त्रुटि के सिद्धांत के को लागू किया जाता है।
७. भारत में समाज कार्य के व्यवसायिक संगठन भी प्रभावशाली ढंग से इस विषय का विकास नहीं कर पा रहे हैं। वह समाज कार्य को व्यवसायिक रूप देने में काफी सीमा तक असफल रहे हैं।
८. भारत में प्रसिद्ध समाज कार्यकर्ताओं (जिसके पास महाविद्यालय/ विश्विद्यालयों की डिग्रीयाँ डिप्लोमा हैं) में केवल लग्नशीलता एवं कर्तव्यपरायणता की कमी है, अपितु उनमें मानवतावादी दृष्टिकोण भी विकसित नहीं हो पाता है। जो व्यवसायिक समाज कार्य के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष :-

समाज कार्य या समाज सेवा एक शैक्षिक एवं व्यवसायिक विद्या है। जो सामुदायिक संगठन एवं अन्य विधियों द्वारा लोगों एवं समूहों के जीवन स्तर को उन्नत बनाने का प्रयत्न करता है सामाजिक कार्य का अर्थ है। सकारात्मक और सक्रिय हस्तक्षेप के माध्यम से लोगों लोगों और उनके सामाजिक माहौल माहौल के बीच अनंत क्रिया प्रोत्साहित

करने के व्यक्तियों की क्षमताओं को बेहतर करना ताकि वे अपनी जिंदगी की जरूरतें पूरी करते हुए अपनी तकलीफ हो को कम कर सकें इस प्रकृति या में समाज कार्य लोगों की आकांक्षाओं की पूर्ति करने और उन्हें अपने ही मूल्यों की कसौटी पर खरे उतरने में सहायक होता है।

सामाजिक कार्यकर्ता सामुदायिक जीवन के प्रत्येक पक्ष वृद्ध आश्रमों अनाथालय स्कूलों अस्पतालों मानसिक स्वास्थ्य क्लिनिक कारागार ओ नियमों तथा अनेक सार्वजनिक एवं निजी एजेंसियों में होते हैं जो जरूरतमंद व्यक्ति को व्यक्तियों तथा परिवारों की सेवा करते है।

सामाजिक कार्य केवल अच्छे कार्य करने तथा शैक्षिक व्यक्तियों की सहायता करने तक ही सीमित नहीं है। काफी समय से यहां एक व्यवसाय के रूप में उभरा है। वास्तव में यहां कोई परंपरागत कैरियर नहीं है, बल्कि निरंतर बढ़ती जा रही विकलांगता निर्धनता मानसिक रोग स्वास्थ्य व्यवस्था से जुड़ी समस्याओं आदि मामलों के साथ ही सामाजिक कार्य आज हमारे समाज के एक महत्वपूर्ण आवश्यक बन गया है। यदि आप भावात्मक पूर्ति के लिए कोई व्यवस्था एक चुनने के इच्छुक है, और आपका कार्य उद्देश्य केवल धन कमाना नहीं है। तो यहां के लिए एक आदर्श कैरियर होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सूदन, सिंह कृपाल समाज कार्य: अभ्यास एवं सिद्धांत न्यू रॉयल बुक पब्लिकेशन लखनऊ
2. जयसवाल, सीताराम, शिक्षा में निर्देश और परामर्श अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, 2011
3. अहमद रफीउद्दीन मिर्झा, समाज कार्य एवं प्रणालियां, शाइनिंग प्रेस लखनऊ, 2004
4. सिंह मंजीत, समाज कार्य के मूल तत्व, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्विद्यालय दिल्ली, 2008
5. द्विवेदी राकेश, समाज कार्य व्यवसाय विकास एवं चुरौतियां, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, 2007
6. www.google.com
7. www.shodhganga.inflibnet.ac.in
8. www.aiirjournal.com

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com